पंचम अध्याय

हिन्दी भाषा-शिक्षण के आधार पर शिक्षकों का विश्लेषण

प्रस्तुत शोध के केन्द्रबिन्दु 'विद्यार्थी' है। विद्यार्थियों की शैक्षिक अवस्था का अनुशीलन इस शोध का मुख्य उद्देश्य है। विद्यार्थियों की स्थिति के अध्ययन के लिए शिक्षकों का अध्ययन भी अनिवार्य है क्योंकि शिक्षक विद्यार्थियों के लिए आइनें के समान है। जिस तरह का ज्ञान शिक्षक देंगे, विद्यार्थी का चरित्र भी उसी तरह उभरेगा। एक विद्यार्थी के पोषण में शिक्षकों की अहम भूमिका होती है। जिस तरह का शिक्षण विद्यार्थियों को दिया जाएगा, वे उसी शिक्षा को ग्रहण करेंगे। अतः शिक्षक मार्ग दर्शक है। इसलिए विद्यार्थियों के अध्ययन के साथ, शिक्षकों का अध्ययन भी भली-भाँति होना चाहिए। प्रस्तुत अध्याय में नगाँव जिले में हिन्दी भाषा-शिक्षण के आधार पर शिक्षकों के परिमाणात्मक तथा गुणात्मक स्वरूप का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

5.1 नगाँव जिले में हिन्दी भाषा-शिक्षण के आधार पर शिक्षकों का परिमाणात्मक स्वरूप एवं उपलब्धियाँ :

नमूना	आयु	लिंग	मातृभाषा	भाषा-ज्ञान
1	55	पुरुष	बंगला	बंगला, हिन्दी, असमिया, संस्कृत,अंग्रेज़ी
2	47	महिला	बंगला	बंगला, हिन्दी, असमिया, अंग्रेज़ी
3	43	महिला	बंगला	बंगला, हिन्दी, असमिया, अंग्रेज़ी
4	40	महिला	असमिया	हिन्दी, असमिया
5	50	पुरुष	असमिया	असमिया, हिन्दी, अंग्रेज़ी, भोजपुरी
6	35	महिला	असमिया	हिन्दी, असमिया, अंग्रेज़ी

नमूना	शिक्षा	हिन्दी शिक्षा का स्तर	शिक्षण अनुभव
1	बी॰ ए॰	साहित्य रत्न, शिक्षा विशारद	26 साल
2	बी॰ ए॰	प्रवीण	21 साल
3	बी॰ ए॰, बी॰ एड॰	रत्न	19 साल
4	बी॰ ए॰	विशारद	15 साल
5	एम॰ ए॰	प्रारंगत	20 साल
6	एम॰ ए॰, बी॰ एड॰	स्नातक	2 साल

नमूना	कक्षा में अध्यापन के दौरान छात्रों के साथ भाषा-प्रयोग	अध्यापन के लिए भाषा प्रयोगशाला का प्रयोग
1	हिन्दी, असमिया, बंगला	हाँ
2	हिन्दी, असमिया, बंगला	हाँ
3	हिन्दी, असमिया, बंगला	हाँ
4	हिन्दी	नहीं
5	असमिया,हिन्दी, अंग्रेज़ी	नहीं
6	हिन्दी, असमिया	नहीं

हिन्दी भाषा-शिक्षण के तहत पद्धतियों का प्रयोग	नमूना					
	1	2	3	4	5	6
रचना पद्धति	✓	✓	✓	✓	✓	✓
स्वयं शिक्षक पद्धति	✓	✓	✓		✓	
श्रवण-भाषण पद्धति	✓	✓	✓	✓	✓	✓
संदर्भ पद्धति	✓	✓	✓		✓	✓
अनुवाद पद्धति	✓	✓	✓		✓	✓
व्याकरण पद्धति	✓	✓	✓	✓	✓	✓
व्याकरण-अनुवाद पद्धति	✓	✓	✓	✓	✓	✓
ध्वन्यात्मक पद्धति	✓	✓	✓			✓
पठन-वाचन पद्धति	✓	✓	✓	✓	✓	✓
सजातीय पद्धति						✓
द्विभाषा पद्धति	✓	✓	✓		✓	✓
सम्मिश्रण पद्धति					✓	
चयन पद्धति					✓	✓
इकाई पद्धति						
प्रत्यक्ष पद्धति					✓	✓

अध्यापन के लिए दृश्य शिक्षण समग्रियों का प्रयोग	नमूना					
	1	2	3	4	5	6
यथार्थ वस्तुएँ	✓	✓	✓			✓
पाठ्य पुस्तक	✓	✓	✓	✓	✓	✓
पट्ट (बोर्ड)	✓	✓	✓	✓	✓	✓
चित्र तथा छायाचित्र	✓	✓	✓	✓	✓	✓
रेखाचित्र	✓	✓	✓			
व्यंगचित्र					✓	
सारणी तथा मानचित्र						✓
चार्ट				✓		✓
वस्तु-प्रतिरूप (मॉडल)				✓		
फ्लैश कार्ड						
प्रक्षेपक						

अध्यापन के लिए श्रव्य शिक्षण समग्रियों का प्रयोग	नमूना					
	1	2	3	4	5	6

लिंग्वाफोन एवं लिंग्वारिकॉर्ड						
टेपरिकार्डर तथा रिकार्ड प्लेयर						
रेडियो				✓		

अध्यापन के लिए दृश्य-श्रव्य शिक्षण समग्रियों का प्रयोग	नमूना					
	1	2	3	4	5	6
चलचित्र						
दूरदर्शन						✓

अध्यापन के लिए प्रौद्योगिकी शिक्षण समग्रियों का प्रयोग	नमूना					
	1	2	3	4	5	6
कम्प्यूटर				✓		✓
अभिक्रमित अध्ययन (programmed learning)						

नमूना	अध्यापन के स्तर पर समस्याएँ
1	व्याकरण का पाठ्यक्रम नहीं है।

2	व्याकरण का पाठ्यक्रम नहीं है।
3	सरकार की तरफ़ से व्याकरण की पुस्तक नहीं है।
4	वर्ण ज्ञान की समस्या, पठन तथा लेखन की समस्या।
5	- उच्चारण, भाषिक, व्याकरणिक, कथित, लिखित समस्याएँ। - चलचित्र, दूरदर्शन, कम्प्यूटर, रेडियो, टेपरिकार्डर तथा रेकॉर्ड प्लेयर विद्यालय में नहीं हैं, जिसके फलस्वरूप श्रव्य शिक्षण, दृश्य श्रव्य शिक्षण के प्रयोग नहीं कर सकते हैं।
6	- मातृभाषा असमिया का ज़्यादा प्रयोग। - ज़्यादातर छात्र-छात्राएँ समाज के पिछले वर्ग से आते हैं। उनके घर में हिन्दी भाषा का प्रचालन ज़्यादा नहीं होने के कारण कक्षा में हिन्दी उच्चारण एवं बोलने में कठिनाई होती है, परंतु समझने में कठिनाई नहीं है। भाषा-प्रयोग में अभाव।

शिक्षकों के संदर्भ में सर्वेक्षण के दौरान चार विद्यालयों से छः नमूने प्राप्त हुए जिनके आधार पर जो परिणाम उपलब्ध हुए, वे निम्नलिखित हैं :

1. हिन्दी भाषा शिक्षण के तहत पद्धतियों का प्रयोग - 65.56%
2. अध्यापन के लिए दृश्य शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग - 45.45%
3. अध्यापन के लिए श्रव्य सामग्रियों का प्रयोग - 5.56%

4. अध्यापन के लिए दृश्य-श्रव्य शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग - 8.33%

5. अध्यापन के लिए प्रौद्योगिकी शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग - 16.67%

5.2 नगाँव जिले में हिन्दी भाषा-शिक्षण के आधार पर शिक्षकों का गुणात्मक स्वरूप एवं उपलब्धियाँ

- ❖ हमें चार विद्यालयों में से छः नमूने मिलें। प्रस्तुत छः नमूनों की आयु 35 से लेकर 55 वर्ष की है जिनमें से तीन की मातृभाषा बंगला है और बाकी तीन की असमिया।
- ❖ अपनी मातृभाषा के अलावा भी इन्हें हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेज़ी तथा भोजपुरी की जानकारी है।
- ❖ इन्होंने बी. ए. , बी. एड. तथा एम. ए. उत्तीर्ण किया हुआ है।
- ❖ शिक्षा अनुभव - इनके पास 2 साल से लेकर 26 साल तक का अनुभव है।
- ❖ कक्षा में अध्यापन के दौरान छात्रों के साथ भाषा-प्रयोग - हिन्दी, असमिया, बंगला, अंग्रेज़ी।
- ❖ अध्यापन के लिए भाषा प्रयोगशाला का प्रयोग - कुछ विद्यालयों मे भाषा प्रयोगशालाओं का प्रयोग होता है, कुछ में नहीं।
- ❖ हिन्दी भाषा-शिक्षण के तहत शिक्षकों द्वारा निम्नलिखित पद्धतियों का प्रयोग किया गया-

1. रचना पद्धति 100%
2. स्वयं शिक्षक पद्धति 66.67%

3. श्रवण-भाषण पद्धति	100%
4. संदर्भ पद्धति	83.33%
5. अनुवाद पद्धति	83.33%
6. व्याकरण पद्धति	100%
7. व्याकरण-अनुवाद पद्धति	100%
8. ध्वन्यात्मक पद्धति	66.67%
9. पठन-वाचन पद्धति	100%
10.सजातीय पद्धति	16.67%
11.द्विभाषा पद्धति	83.33%
12.सम्मिश्रण पद्धति	16.67%
13.इकाई पद्धति	0%
14.प्रत्यक्ष पद्धति	33.33%
15.चयन पद्धति	33.33%

❖ अध्यापन के लिए दृश्य शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग :

1. यथार्थ वस्तुएँ	66.67%
2. पाठ्य पुस्तक	100%
3. पट्ट (बोर्ड)	100%
4. चित्र तथा छायाचित्र	100%

5. रेखाचित्र 50%

6. व्यंग्यचित्र 16.67%

7. सारणी तथा मानचित्र 16.67%

8. चार्ट 33.33%

9. फ्लैश कार्ड 0%

10. प्रक्षेपक 0%

- अध्यापन के लिए श्रव्य शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग :

1. लिंग्वाफोन एवं लिंग्वारिकॉर्ड 0%

2. टेपरिकॉर्डर तथा रिकॉर्ड प्लेयर 0%

3. रेडियो 16.67%

- अध्यापन के लिए दृश्य-श्रव्य शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग :

1. चलचित्र 0%

2. दूरदर्शन 16.67%

- अध्यापन के लिए प्रौद्योगिकी शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग :

1. कम्प्यूटर 33.33%

2. अभिक्रमित अध्ययन (programmed learning) 0%

नोट - जहाँ पद्धतियों तथा सामग्रियों का प्रयोग हुआ है, उनके आगे (✓) चिह्न लगाया गया है।

उपसंहार

भाषा का मुख्य कार्य विचारों का आदान-प्रदान है। वक्ता जिस भाव को व्यक्त करना चाहता है, उसे श्रोता अगर पूर्ण रूप से ग्रहण कर पाता है, तो भाषा का कार्य सम्पन्न होता है। भाषा को समाज का आईना माना गया है। एक समाज कितना प्रतिष्ठित है, यह उसकी भाषा-प्रयोग से पता चलता है। इसीलिए भाषा का सही ज्ञान होना आवश्यक है।

असम एक अहिंदी भाषी प्रांत है। यहाँ हिन्दी की शिक्षा द्वितीय भाषा के रूप में दी जाती है। तो ज़ाहिर है यहाँ हिन्दी भाषा का विकास उस रूप से नहीं हो पा रहा, जैसे हिन्दी भाषी प्रान्तों में होता है। असम राज्य की सरकारी विद्यालयों में हिन्दी की शिक्षा कक्षा छः से दी जाती है। निर्धारित व्याकरण के पुस्तकों के अभाव में तथा हिन्दी विषय में अनुपलब्ध शिक्षकों के कारण हिन्दी शिक्षण की स्थिति बहुत ही दयनीय है।

प्रस्तुत शोध 'हिन्दी भाषा-शिक्षण के निकष पर असम के विद्यालयों का अनुशीलन (नगाँव जिले के विशेष संदर्भ में)' का आधार चारों भाषाई कौशलों को रखा गया, जो हैं - श्रवण, भाषण, वाचन तथा लेखन। 'क्षेत्र सर्वेक्षण' प्रविधि के अंतर्गत 'निर्णय नमूना' (judgement sampling) के द्वारा विद्यार्थियों एवं शिक्षकों का परिमाणात्मक (quantitative) तथा गुणात्मक (qualitative) विश्लेषण किया गया है। भाषा-शिक्षण के व्यावहारिक पक्ष को समझने से पहले इसके सैद्धान्तिक पक्ष का भली-भाँति ज्ञान होना आवश्यक है। अतः इस शोध के प्रथम दो अध्यायों में भाषा-शिक्षण के सिद्धान्तों के विभिन्न पक्षों को शामिल किया गया जहाँ भाषा के स्वरूप एवं विकास को दिखाते हुए हिन्दी भाषा-शिक्षण के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया गया है।

तृतीय अध्याय से पांचवें अध्याय तक भाषा के व्यावहारिक पक्ष तथा प्रस्तुत शोध के मुख्य उद्देश्य को केन्द्रित किया गया है। इस शोध का केन्द्रबिन्दु है - विद्यार्थी। असम

तथा विशेष रूप से नगाँव में हिन्दी शिक्षण की स्थिति को उजागर करना ही इस शोध का उद्देश्य है। नगाँव में स्थित चार उच्च विद्यालयों में से कुल 82 नमूने शोध अध्ययन हेतु लिए गए हैं। चारों भाषाई कौशलों के आधार पर जो परिमाणात्मक स्वरूप प्राप्त हुआ, उसके अनुसार श्रवण के अंतर्गत 71.79%, भाषण के अंतर्गत 73.54%, पठन के अंतर्गत 62.44% तथा लेखन का अध्ययन दो आधारों पर किया गया है - पहला वाक्य संरचना जहाँ विभक्तियों, उपसर्ग, प्रत्ययों, रूप-रचना, पदबंध आदि का अध्ययन हुआ है। इसके अंतर्गत 60.22% आए तथा दूसरा आधार व्याकरण है, जिसमें लिंग, वचन, काल आदि का अध्ययन किया गया है। इसके अंतर्गत 85.04% परिणाम आए।

गुणात्मक विश्लेषण के अंतर्गत जो परिणाम प्राप्त हुए, वे निम्नलिखित हैं -

*भाषा प्रयोग : भाषा प्रयोग की दृष्टि से सारे विद्यार्थी अहिंदी भाषी हैं।

-56.10% विद्यार्थी घर में अपने परिवार के सदस्यों के साथ असमिया भाषा का प्रयोग करते हैं, 18.29% बंगला भाषा, 3.66% अरबी भाषा (लोक मुसलमानी भाषा), 1.30% कार्बी भाषा तथा 1.30% विद्यार्थी नेपाली भाषा का प्रयोग करते हैं।

-हिन्दी के कक्षा में 74.39% विद्यार्थी असमिया भाषा का प्रयोग करते हैं, 17.07% हिन्दी भाषा, 15.85% बंगला भाषा का प्रयोग करते हैं।

-विद्यालय में दोस्तों के साथ वार्तालाप करते समय 80.49% विद्यार्थी असमिया भाषा का प्रयोग, 18.39% बंगला भाषा, 2.44% हिन्दी भाषा का प्रयोग करते हैं।

*शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग : कक्षा में अध्ययन के दौरान हिन्दी के शिक्षकों द्वारा निम्नलिखित शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग किया जाता है -

-पाठ्य पुस्तक (books)

-पट्ट (board)

-यथार्थ वस्तुएँ (actual / real things)

-चित्र (picture)

-चार्ट (chart)

-मानचित्र (map)

-वस्तु-प्रतिरूप (model)

-रेखाचित्र (sketch)

-चलचित्र (cinema)

-व्यंग्यचित्र (cartoon)

बाकि के शिक्षण सामग्री (टेपरिकॉर्डर, कम्प्यूटर, रेडियो, दूरदर्शन) जिनका भाषा-शिक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका है, उनका प्रयोग कक्षा में विभिन्न कारणों से नहीं हो पा रहा है।

*रुचि : अगर रुचि की बात करे तो 80.49% विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा के प्रति रुचि है।

*भाषा कौशल : भाषा कौशल के अंतर्गत निम्नलिखित कठिनाइयाँ आई हैं :

-श्रवण कौशल के अंतर्गत ध्वनि को पहचानने में तथा समान प्रतीत होती ध्वनि के अंतर को समझने में कठिनाइयाँ आईं।

-भाषण कौशल के अंतर्गत वाक्यों को परखने में कठिनाई आई। वाक्य सामान्य है अथवा प्रश्नवाचक, आदि वाक्य गठन का सही ढंग से प्रयोग नहीं हो पाता। चिह्नों की समझ नहीं है। सम स्वर तथा सम व्यंजन वाले शब्दों के प्रयोग में कठिनाई होती है। उच्चारण में गलतियाँ हैं।

-पठन कौशल के अंतर्गत मात्राओं का गलत प्रयोग होता है। द्वितत्व शब्दों तथा चिह्नों के प्रयोग में अशुद्धियाँ हैं। ध्वनि उच्चारण में गलतियाँ हैं।

-लेखन कौशल के अंतर्गत वाक्य रचना में कठिनाइयाँ होती हैं। वर्तनी में अशुद्धियाँ हैं। कारक चिह्नों के प्रयोग में अशुद्धियाँ हैं। वाक्य रचना में लिंग प्रयोग में अशुद्धियाँ हैं तथा वाक्य गठन में अशुद्धियाँ हैं।

-व्याकरण के अंतर्गत लिंग, काल तथा वचन प्रयोग में गलतियाँ हैं।

पाँचवां अध्याय शिक्षकों के अध्ययन से है। इस सर्वेक्षण के दौरान परिमाणात्मक विश्लेषण के तहत जो उपलब्धियाँ प्राप्त हुईं, वे निम्नलिखित हैं :

*भाषा-शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग :

-हिन्दी भाषा-शिक्षण के तहत कक्षा में शिक्षक द्वारा 65.56% शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग हुआ है।

-दृश्य शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग - 45.45%

-श्रव्य शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग - 5.56%

-दृश्य-श्रव्य शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग - 8.33%

-प्रौद्योगिकी शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग - 16.67%

शिक्षकों के गुणात्मक विश्लेषण के दौरान जो उपलब्धियाँ प्राप्त हुईं, वे निम्नलिखित हैं :

*भाषा प्रयोग : सभी शिक्षक अहिंदी भाषी हैं तथा कक्षा में हिन्दी के अलावा असमिया, बंगला, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं का भी प्रयोग होता है।

*शिक्षा : शिक्षक बी॰ ए॰, एम॰ ए॰ आदि डिग्रियों से उत्तीर्ण हैं।

*अनुभव : शिक्षकों का 2 साल से लेकर 26 साल का अनुभव है।

*भाषा-शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग : हिन्दी भाषा-शिक्षण के तहत शिक्षकों द्वारा निम्नलिखित पद्धतियों का प्रयोग किया गया -

1.	रचना पद्धति	100%
2.	स्वयं शिक्षक पद्धति	66.67%
3.	श्रवण-भाषण पद्धति	100%
4.	संदर्भ पद्धति	83.33%
5.	अनुवाद पद्धति	83.33%
6.	व्याकरण पद्धति	100%
7.	व्याकरण-अनुवाद पद्धति	100%
8.	ध्वन्यात्मक पद्धति	66.67%
9.	पठन-वाचन पद्धति	100%
10.	सजातीय पद्धति	16.67%
11.	द्विभाषा पद्धति	83.33%
12.	सम्मिश्रण पद्धति	16.67%
13.	इकाई पद्धति	0%
14.	प्रत्यक्ष पद्धति	33.33%
15.	चयन पद्धति	33.33%

-अध्यापन के लिए दृश्य शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग :

1.	यथार्थ वस्तुएँ	66.67%
2.	पाठ्य पुस्तक	100%
3.	पट्ट (बोर्ड)	100%
4.	चित्र तथा छायाचित्र	100%
5.	रेखाचित्र	50%
6.	व्यंग्यचित्र	16.67%
7.	सारणी तथा मानचित्र	16.67%
8.	चार्ट	33.33%
9.	फ्लैश कार्ड	0%
10.	प्रक्षेपक	0%

-अध्यापन के लिए श्रव्य शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग :

1.	लिंग्वाफोन एवं लिंग्वारिकॉर्ड	0%
2.	टेपरिकॉर्डर तथा रिकॉर्ड प्लेयर	0%
3.	रेडियो	16.67%

-अध्यापन के लिए दृश्य-श्रव्य शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग :

1.	चलचित्र	0%
2.	दूरदर्शन	16.67%

-अध्यापन के लिए प्रौद्योगिकी शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग :

1. कम्प्यूटर 33.33%

2. अभिक्रमित अध्ययन (programmed learning) 0%

उपर्युक्त उपलब्धियों से यही निष्कर्ष निकलता है कि - शिक्षण पद्धतियों तथा शिक्षण सामग्रियों के अभाव में भाषा अध्यापन सही ढंग से नहीं हो पा रहा है। विद्यालयों में शिक्षक की बात करे तो कुछ ऐसे शिक्षक हिन्दी पढ़ा रहे हैं जो दूसरे विषयों से हैं। व्याकरण के अंतर्गत कोई निर्धारित पाठ्यक्रम तथा पाठ्य पुस्तक उपलब्ध नहीं होने के कारण शिक्षक मनमाने ढंग से व्याकरण की शिक्षा दे रहे हैं।

एक शोधार्थी होने के नाते मुझे यह लगता है कि अगर कक्षा में भाषा-शिक्षण की पद्धतियों तथा शिक्षण-सामग्रियों का शिक्षक द्वारा पूर्ण प्रयोग हो सके, तो शिक्षण सार्थक हो सकता है जिसके फलस्वरूप सभी कौशलों का पूर्ण विकास होने की संभावना है।